

॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ इति आश्रमवा० नै० भारतभा० द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ आज्ञापयामासेति ॥ १ ॥ २ ॥ यानैर्भनुष्यवाहैः ॥ ३ ॥ नखरप्रासः व्याघ्रनखवत्पराचीनफलक  
यश्च पौरजनः कश्चिद्भृष्टमिच्छति पार्थिवं ॥ अनावृतः सुविहितः सच यातु सुरक्षितः ॥ २२ ॥ सूदाः पौरगवाश्चैव सर्वे चैव महानसं ॥ विविधं भक्ष्यभोज्यं च शकटैरु  
त्थतां मम ॥ २३ ॥ प्रयाणं घुष्यतां चैव श्वोभूत इति माचिरं ॥ क्रियतां पथि चाप्यघवेऽस्मानि विविधानि च ॥ २४ ॥ एवमाज्ञाप्य राजा स भ्रातृभिः सह पाण्डवः ॥  
श्वोभूते निर्ययौ राजन् सखी वृद्धपुरःसरः ॥ २५ ॥ सर्वा हि दिवसानेव जनौ घं परिपालयन् ॥ न्यवसन्नपतिः पंचततो गच्छद्द्वन्द्वं प्रति ॥ २६ ॥ इति श्रीमहाभारते आश्र  
मवासि० आश्रमवा० युधिष्ठिरयात्रायां द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ वैशंपायन उवाच  
सांलोकपालोपमैर्नरैः ॥ १ ॥ योगो योगइति प्रीत्या ततः शब्दो महानभूत् ॥ क्रोशतां सादिना तत्र युज्यतां युज्यतामिति ॥ २ ॥ केचिद्यानैर्न राजग्मुः केचिदश्वैर्महा  
जवैः ॥ कांचनैश्चरथैः केचिज्ज्वलितज्वलनोपमैः ॥ ३ ॥ गजैर्द्रैश्चरथैवान्ये केचिदुष्टैर्नराधिप ॥ पदातिनस्तथैवान्ये नखरप्रासयोधिनः ॥ ४ ॥ पौरजानपदाश्चैव  
यानैर्बहुवैस्तथा ॥ अन्वयुः कुरुराजानं धृतराष्ट्रं दिदृक्षवः ॥ ५ ॥ सचापिराजवचनादाचार्यो गौतमः रूपः ॥ सेनामादाय सेनानीः प्रययावाश्रमं प्रति ॥ ६ ॥  
ततो द्विजैः परिवृतः कुरुराजो युधिष्ठिरः ॥ संस्तुयमानो बहुभिः सूतमागधबन्दिभिः ॥ ७ ॥ पाण्डुरेणातपत्रेण ध्रियमाणेन मूर्धनि ॥ रथानीकेन महतानिर्जगाम कुरु  
द्वहः ॥ ८ ॥ गजैश्चाचलसंकाशैर्भीमकर्मवृकोदरः ॥ सज्जयन्त्रायुधोपेतैः प्रययौ पवनात्मजः ॥ ९ ॥ माद्रीपुत्रावपितथा हयारोहौ सुसंवृतौ ॥ जग्मतुः शीघ्रगमनौ  
सन्नद्धकवचध्वजौ ॥ १० ॥ अर्जुनश्च महतेजारथेनादित्यवर्चसा ॥ वशीश्चैतैर्ययुर्कैर्दिव्येनान्वगमन्पृ॥ ११ ॥ द्रौपदी प्रमुखाश्चापि स्त्रीसंघाः शिबिकायुताः ॥  
रुयध्यक्षगुप्ताः प्रययुर्विस्तृजंतो मितं वसु ॥ १२ ॥ समृद्धरथहस्त्यश्च वेणुवीणानुनादितं ॥ श्रुशुभे पाण्डवं संन्यतत्तदा भरतर्षभ ॥ १३ ॥ नदीतीरेषु रम्येषु सरः सु  
चविशांपते ॥ वासान्कृत्वा क्रमेणाथ जग्मुस्ते कुरुपुंगवाः ॥ १४ ॥ युयुत्सुश्च महते जाधौम्यश्चैव पुरोहितः ॥ युधिष्ठिरस्य वचनात्पुर्गुप्तिं प्रचक्रतुः ॥ १५ ॥ ततो  
युधिष्ठिरो राजा कुरुक्षेत्रमवातरत् ॥ क्रमेणोत्तीर्य मुनानदीं परमपाविनीं ॥ १६ ॥ सददर्शाश्रमं दूराद्राजर्षेस्तस्य धीमतः ॥ शतयूपस्य कौरव्यधृतराष्ट्रस्य चैव ह  
॥ १७ ॥ ततः प्रमुदितः सर्वो जनस्तद्वनमंजसा ॥ विवेश सुमहानादिरापूर्य भरतर्षभ ॥ १८ ॥ इति० आश्रम० आ० धृतराष्ट्राश्रमगमने त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

कुक्षिर्ध्वः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ इति आश्रमवा० नै० भारतभा० त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥